INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

धर्म और राजनीति की अंतर्क्रिया पर एक लघु अध्ययन

[1]शशि भूषण कुमार, [2]डॉ. राज कुमार (प्रोफेसर)
[1]शोधार्थी, [2]पर्यवेक्षक
[1–2]विभाग: आर्ट एंड सोशल साइंस, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

सार
यह शोध पत्र धर्म और राजनीति के बीच जटिल संबंधों का अध्ययन करता है, जिसमें उनके ऐतिहासिक, सैद्धांतिक और समकालीन अंतर्संबंधों की पड़ताल की गई है। प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक युगों में धर्म और शासन के संबंधों के गहन विश्लेषण से यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि समाज के दो प्रमुख स्तंभों, धर्म और राजनीति, के बीच सहयोग और तनाव कैसे कायम रहा है। विशेष रूप से भारत के संदर्भ में, और उसके बाद वैश्विक दृष्टिकोण से, यह शोध विश्लेषण करता है कि धार्मिक विचारधाराएं राजनीतिक एजेंडों को कैसे प्रभावित करती हैं और इसके विपरीत। निष्कर्ष में धर्म और राजनीति के बीच संतुलन बनाए रखने के महत्व पर जोर दिया गया है ताकि समाज में शांति और लोकतांत्रिक संरचना को बनाए रखा जा सके।

मुख्य शब्द: धर्म, राजनीति, धर्मनिरपेक्षता, धार्मिक शासन, भारत, वैश्विक दृष्टिकोण, सामाजिक शांति, लोकतांत्रिक संरचना।

1. प्रस्तावना

धर्म और राजनीति का संबंध अत्यंत गहरा और सदियों पुराना है। यह संबंध मानव सभ्यता की नींव में बसा हुआ है और उसने समाज की नैतिकता, कानून, और शक्ति संरचना पर व्यापक प्रभाव डाला है। प्राचीन सभ्यताओं में जैसे कि मिस्र, ग्रीस, और भारत, धर्म और राजनीति एक दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करते थे। मिस्र में फराओ को ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था और उनकी राजनीतिक सत्ता धार्मिक अधिकार से जुड़ी होती थी। इसी प्रकार, ग्रीस में देवताओं और धार्मिक मिथकों का महत्वपूर्ण राजनीतिक महत्व था, जो लोगों के विश्वास को भी स्थिरता प्रदान करता था। भारत में भी वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक धर्म और राजनीति के बीच एक विशेष संबंध देखा जा सकता है, जहाँ राजा न केवल एक राजनैतिक प्रमुख होते थे, बल्कि धर्म का संरक्षक भी माने जाते थे। इन प्राचीन सभ्यताओं में, धर्म और राजनीति का एक संयुक्त ढांचा स्थापित था, जो समाज की संरचना, नियमों, और मूल्य व्यवस्था को परिभाषित करता था। धर्म और राजनीति दोनों का उद्देश्य समाज में अनुशासन और व्यवस्था बनाए रखना है। एक ओर धर्म लोगों के नैतिक आचरण को निर्देशित करता है, जिससे समाज में एक नैतिक ढांचा तैयार होता है, वहीं दूसरी ओर राजनीति समाज के प्रशासन और कानून व्यवस्था को संतुलित रखने का कार्य करती है। समय के साथ, धर्म और राजनीति के बीच विभिन्न प्रकार के सहयोग और संघर्ष सामने आए हैं। उदाहरण के लिए, मध्यकालीन युग में यूरोप में चर्च का राजनीतिक सत्ता पर अत्यधिक नियंत्रण था, जहाँ धार्मिक संस्थाओं का राज्य पर वर्चस्व था। वहीं दूसरी ओर, आधुनिक युग में लोकतांत्रिक व्यवस्था के उदय के साथ धर्म और राजनीति के बीच एक स्पष्ट विभाजन स्थापित करने की प्रवृत्ति देखी गई, जिसे धर्मनिरपेक्षता कहा जाता है। किंतु, फिर भी अनेक समाजों में धर्म का प्रभाव राजनीति पर बरकरार है, जिससे यह संबंध और भी अधिक जटिल होता जा रहा है।

उद्देश्य: इस अध्ययन का उद्देश्य धर्म और राजनीति के बीच गहरे और जटिल संबंधों का विश्लेषण करना है। आधुनिक समाज में, ये दोनों संस्थान एक–दूसरे को गहराई से प्रभावित करते हैं और सामाजिक संरचना में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि कैसे धर्म और राजनीति के विभिन्न पहलू एक–दूसरे के साथ संवाद और विरोध करते हैं। यह समझना आवश्यक है कि किस प्रकार धर्म, लोगों के व्यक्तिगत और सामूहिक आचरण को निर्देशित करता है और कैसे राजनीति उन

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

आचरणों को सामाजिक और कानूनी ढांचे में ढालने का कार्य करती है। इस प्रकार, इस शोध का उद्देश्य धर्म और राजनीति के बीच की इस अंतर्संबंध को स्पष्ट करना और इसके विभिन्न आयामों का अध्ययन करना है।

अध्ययन की प्रासंगिकता: वर्तमान समय में, धर्म और राजनीति का संबंध अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि समाज के अनेक राजनीतिक निर्णय धार्मिक मान्यताओं और विश्वासों से प्रभावित होते हैं। आज, धर्म का प्रभाव केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सार्वजनिक नीतियों, कानूनों, और राजनीतिक विचारधाराओं पर भी गहरा प्रभाव डालता है। उदाहरणस्वरूप, भारत जैसे देश में जहाँ विविध धर्मों का मिश्रण है, वहाँ धार्मिक आस्थाएँ और राजनीतिक निर्णय गहरे रूप से जुड़े हुए हैं। इस अध्ययन के माध्यम से हम यह समझ सकते हैं कि धार्मिक विचारधाराएं कैसे राजनीतिक दृष्टिकोण को आकार देती हैं और इसके विपरीत, राजनीतिक नीतियाँ धर्म को किस प्रकार से प्रभावित करती हैं। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन समाज के वर्तमान और भविष्य के राजनीतिक वातावरण को समझने में सहायक होगा, जिससे हम धर्म और राजनीति के बीच एक संतुलन स्थापित कर सकें। समाज में शांति, न्याय और प्रगति के लिए इन दोनों संस्थानों का संतुलित सहयोग आवश्यक है, और यह अध्ययन इस संतुलन को प्राप्त करने में सहायक हो सकता है।

2. धर्म और राजनीति का ऐतिहासिक संबंध

धर्म और राजनीति का संबंध मानव सभ्यता के आरंभ से ही जुड़ा हुआ है। दोनों ने समाज की संरचना और लोगों के जीवन को प्रभावित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विभिन्न समयों और सभ्यताओं में धर्म और राजनीति का संबंध विभिन्न प्रकार से देखने को मिलता है, जो सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का प्रतीक रहा है।

- **प्राचीन सभ्यताओं में धर्म और शासन का संबंध**

प्राचीन सभ्यताओं में धर्म और शासन का एक संयुक्त ढांचा देखने को मिलता है, जहाँ धार्मिक विश्वासों ने राजनीतिक सत्ता को वैधता प्रदान की। उदाहरण के लिए, प्राचीन मिस्र में फराओ को ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था, जिससे उनकी राजनीतिक सत्ता को धार्मिक समर्थन प्राप्त होता था। फराओ न केवल राज्य का शासक होता था बल्कि धार्मिक अनुष्ठानों का संचालन कर समाज में स्थिरता बनाए रखता था। इसी तरह, ग्रीस में देवताओं और मिथकों ने सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित किया। ग्रीक समाज में देवताओं की पूजा और धार्मिक समारोहों का आयोजन समाज के नैतिक मूल्यों को स्थापित करने का साधन था, और इसके द्वारा राजा या शासक की सत्ता को भी सुदृढ़ता मिलती थी। भारत में भी वैदिक काल के दौरान धर्म और राजनीति का घनिष्ठ संबंध था, जहाँ राजा को धर्म का रक्षक और पालनकर्ता माना जाता था।

- **मध्यकालीन युग में चर्च और राज्य का संबंध**

मध्यकालीन युग में धर्म और राजनीति का संबंध विशेषकर यूरोप में अत्यधिक प्रभावशाली और जटिल हो गया था। इस युग में कैथोलिक चर्च ने समाज और राजनीति पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था, जिससे राजा और चर्च के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित हुआ। चर्च केवल धार्मिक अधिकार का केंद्र नहीं था, बल्कि उसने राजनीतिक निर्णयों पर भी नियंत्रण स्थापित कर रखा था। इस युग में, चर्च के पादरी और पोप जैसे धार्मिक नेता राजनीति में प्रभावशाली भूमिका निभाते थे। शासक अपने शासन की वैधता के लिए चर्च का समर्थन प्राप्त करते थे, और चर्च को भी राज्य से कई प्रकार के विशेषाधिकार प्राप्त होते थे। इस प्रकार, धर्म और राजनीति का यह संबंध समाज के सामाजिक और नैतिक ढांचे को नियंत्रित करने का कार्य करता था।

- **भारत में धर्म और राजनीति का ऐतिहासिक विकास**

भारत में धर्म और राजनीति का संबंध वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक विभिन्न रूपों में देखा गया

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

है। वैदिक काल में राजा को धर्म के नियमों का पालनकर्ता माना जाता था और वे यज्ञ तथा धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से राज्य की समृद्धि और शांति की कामना करते थे। मध्यकाल में मुगल शासन के दौरान भी धर्म और राजनीति का संबंध बदलता रहा, जहाँ धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक एकता का प्रयास किया गया। ब्रिटिश शासन के दौरान भी धर्म और राजनीति का संबंध परिलक्षित हुआ, जब धार्मिक विचारधारा के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को प्रेरणा मिली। इस प्रकार, भारत के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में धर्म और राजनीति का संबंध सदैव समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है, जिसने समाज को नई दिशा और पहचान दी है।

3. धर्म और राजनीति के सिद्धांत

धर्म और राजनीति के सिद्धांत समाज के नैतिक और सामाजिक ढांचे को परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये सिद्धांत इस बात का विश्लेषण करते हैं कि धर्म और राजनीति कैसे समाज में एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं और कैसे उनकी परस्पर क्रिया से समाज की नैतिकता, कानून और शासन प्रणाली पर असर पड़ता है।

- **धर्म की परिभाषा और इसके विभिन्न सिद्धांत**

धर्म, किसी भी समाज की नैतिकता और विश्वास प्रणाली का प्रतीक है, जो व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन को दिशा देता है। धर्म मानव जीवन के कई पहलुओं को प्रभावित करता है और इसके सिद्धांतों में मुख्यतः आस्था, नैतिकता, अनुष्ठान और आध्यात्मिकता आते हैं। विभिन्न धर्म अपने–अपने सिद्धांतों के माध्यम से लोगों के जीवन को एक नैतिक ढांचे में बाँधने का प्रयास करते हैं। धर्म के सिद्धांत यह परिभाषित करते हैं कि किस प्रकार व्यक्ति अपने जीवन को जीए और समाज में एक स्वस्थ्य और नैतिक संबंध बनाए रखे।
धार्मिक सिद्धांतों में कर्म, पुनर्जन्म, और ईश्वर के प्रति आस्था का विशेष महत्व होता है। जैसे हिंदू धर्म में कर्म का सिद्धांत है, जो बताता है कि व्यक्ति के कार्यों का प्रभाव उसके जीवन और मृत्यु के बाद भी रहता है। इस्लाम में ईश्वर की सत्ता को सर्वोच्च मानते हुए, अल्लाह के प्रति समर्पण और समाज के प्रति कर्तव्यों का महत्व है। ईसाई धर्म में भी प्रेम, दया, और करुणा का विशेष महत्व है, जो सामाजिक और नैतिक मूल्यों को स्थापित करने का कार्य करता है।

- **राजनीति की परिभाषा और इसके मूल सिद्धांत**

राजनीति का उद्देश्य समाज में शक्ति और संसाधनों का संतुलित वितरण करना है। राजनीति एक ऐसा ढांचा प्रदान करती है, जिससे समाज में विभिन्न विचारधाराएं और नीतियाँ संतुलन में रहती हैं। राजनीति के सिद्धांतों में मुख्यतः शक्ति संतुलन, लोकतंत्र, स्वतंत्रता, समानता और सामाजिक न्याय के सिद्धांत शामिल होते हैं। ये सिद्धांत समाज में शांति और व्यवस्था बनाए रखने का कार्य करते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि समाज में सभी लोगों के अधिकार सुरक्षित रहें।
राजनीतिक सिद्धांत विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं, जैसे लोकतंत्र, तानाशाही, साम्यवाद और पूंजीवाद। लोकतंत्र में लोगों को अपने नेता चुनने का अधिकार होता है, जबकि तानाशाही में शक्ति एक ही व्यक्ति या दल के हाथ में केंद्रित होती है। साम्यवाद एक ऐसी राजनीतिक विचारधारा है जो संसाधनों के समान वितरण पर जोर देती है, जबकि पूंजीवाद व्यक्तिगत संपत्ति और स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है।

- **धर्म और राजनीति के अंतर्संबंध को समझाने के लिए प्रमुख सिद्धांत**

धर्म और राजनीति के बीच का संबंध कई प्रमुख सिद्धांतों के माध्यम से समझा जा सकता है, जो समाज की संरचना और कार्यप्रणाली पर गहरा प्रभाव डालते हैं।

1. **धर्मनिरपेक्षता:** धर्मनिरपेक्षता एक ऐसा सिद्धांत है, जिसमें राज्य को धर्म से अलग रखा जाता है। इसका उद्देश्य समाज में सभी धर्मों के प्रति समानता बनाए रखना और सरकार के निर्णयों में धार्मिक हस्तक्षेप को रोकना है। धर्मनिरपेक्षता का मुख्य सिद्धांत यह है कि राज्य किसी विशेष धर्म का समर्थन नहीं करेगा और सभी नागरिकों को समान अधिकार देगा, चाहे उनकी धार्मिक पहचान कुछ भी हो।

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

उदाहरण के लिए, भारत में धर्मनिरपेक्षता का सिद्धांत संविधान में निहित है, जहाँ राज्य सभी धर्मों के प्रति तटस्थता रखता है।

2. **थियोक्रेसी:** थियोक्रेसी एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था है जिसमें राज्य का शासन धार्मिक नेताओं के हाथ में होता है और सरकार के निर्णय धार्मिक कानूनों पर आधारित होते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, धर्म और राज्य का एकीकरण होता है, और धार्मिक ग्रंथों को कानूनी और सामाजिक नियमों का आधार माना जाता है। उदाहरण के लिए, ईरान एक थियोक्रेटिक राज्य है, जहाँ इस्लामी कानून और धार्मिक नेता शासन प्रणाली का मुख्य हिस्सा हैं।
3. **बहुलवाद:** बहुलवाद एक ऐसा सिद्धांत है जो समाज में विभिन्न धर्मों और सांस्कृतिक पहचान को स्वीकार करता है और सभी को समान अधिकार और स्वतंत्रता प्रदान करता है। बहुलवाद का मानना है कि विभिन्न धार्मिक समूहों का सह–अस्तित्व समाज को अधिक विविध और समृद्ध बनाता है। यह सिद्धांत विशेष रूप से लोकतांत्रिक समाजों में महत्वपूर्ण है, जहाँ कई धर्म और संस्कृतियाँ एक साथ रहते हैं। बहुलवाद का उद्देश्य विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान के प्रति सम्मान और सहिष्णुता को बढ़ावा देना है।
4. **राष्ट्रवाद और धार्मिक राजनीति:** राष्ट्रवाद और धर्म के बीच का संबंध भी एक प्रमुख सिद्धांत है। यह विचारधारा इस बात पर बल देती है कि एक विशिष्ट धर्म राष्ट्रीय पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकता है। उदाहरण के लिए, कई देशों में धार्मिक राष्ट्रवाद का प्रभाव देखा जा सकता है, जहाँ धार्मिक पहचान को राष्ट्रीयता के साथ जोड़कर देखा जाता है। धार्मिक राष्ट्रवाद का उद्देश्य समाज में एकता और पहचान को मजबूत करना है, लेकिन इसके परिणामस्वरूप सामाजिक विभाजन और संघर्ष भी उत्पन्न हो सकते हैं।
5. **मानवतावाद और सामाजिक न्याय:** धर्म और राजनीति के संबंध में मानवतावाद एक ऐसी दृष्टि प्रदान करता है जो समाज के हर व्यक्ति को समान अधिकार देने का समर्थन करता है, चाहे उनकी धार्मिक मान्यता कुछ भी हो। मानवतावाद एक धर्म–निरपेक्ष दृष्टिकोण है, जो सभी लोगों के प्रति समानता, स्वतंत्रता और न्याय का समर्थन करता है। इस सिद्धांत के अनुसार, राजनीतिक निर्णयों को धार्मिक सिद्धांतों पर आधारित नहीं होना चाहिए, बल्कि समाज के सभी वर्गों के कल्याण को ध्यान में रखकर किए जाने चाहिए।

इन सिद्धांतों के माध्यम से, धर्म और राजनीति के बीच की जटिलता को समझा जा सकता है। धर्म और राजनीति दोनों का उद्देश्य समाज को दिशा देना है, लेकिन इनके कार्य और आदर्श अलग–अलग हैं। जहाँ धर्म व्यक्तिगत और सामूहिक नैतिकता को स्थापित करता है, वहीं राजनीति समाज के प्रशासन और कानूनी ढांचे को संतुलित करने का कार्य करती है। इन सिद्धांतों के द्वारा समाज में धर्म और राजनीति के बीच सामंजस्य बनाए रखने का प्रयास किया जाता है ताकि समाज में शांति, स्थिरता और प्रगति संभव हो सके।

4. धर्म और राजनीति के अंतर्क्रियात्मक कारक

धर्म और राजनीति का संबंध जटिल और परस्पर प्रभावशाली है। समाज में धर्म और राजनीति के विभिन्न पहलू एक–दूसरे को गहराई से प्रभावित करते हैं, जिससे नैतिकता, कानून, सामाजिक मुद्दे और आंदोलनों पर इनका व्यापक प्रभाव पड़ता है। इस संबंध में कई कारक उभरकर सामने आते हैं, जो धर्म और राजनीति के बीच संघर्ष, सहयोग, और परस्पर समन्वय को परिभाषित करते हैं।

- **धर्म और राजनीतिक आदर्शों के बीच संघर्ष**

धर्म और राजनीति के बीच नैतिकता, कानून और व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे मुद्दों पर अक्सर टकराव देखने को मिलता है। धर्म अपने सिद्धांतों और नियमों के माध्यम से एक नैतिक ढांचे की स्थापना करता है, जिसमें व्यक्तिगत आचरण और जीवन के उद्देश्य को निर्धारित किया जाता है। अधिकांश धर्मों में कुछ विशिष्ट नैतिक मानदंड होते हैं, जो समाज के सदस्यों के आचरण पर प्रतिबंध लगाते हैं और एक प्रकार की नैतिकता का समर्थन करते हैं। उदाहरणस्वरूप, इस्लाम में शराब और सूद का निषेध है, जबकि हिंदू धर्म में मांसाहार और

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

बलि जैसे अनुष्ठानों का उल्लेख है। ये धार्मिक नियम लोगों के जीवन पर नैतिक सीमाएं लगाते हैं और एक निश्चित ढांचे में जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

दूसरी ओर, राजनीति समाज के प्रत्येक वर्ग के अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा करने का प्रयास करती है। राजनीति में नैतिकता की परिभाषा अधिक व्यापक होती है, जो समाज में विविधता को स्वीकार करते हुए हर व्यक्ति को समान अधिकार देने का प्रयास करती है। लोकतंत्र जैसे राजनीतिक ढांचे में, नागरिकों की स्वतंत्रता और अधिकारों का विशेष महत्व होता है, और राज्य उन अधिकारों की रक्षा करने का प्रयास करता है। यहाँ पर धर्म और राजनीति के बीच संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब धार्मिक नियम व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सीमित करते हैं या राजनीतिक अधिकारों से टकराते हैं। उदाहरण के लिए, धार्मिक मामलों में पुरुष और महिला के अधिकारों में असमानता जैसे मुद्दे, जहाँ धार्मिक नियम महिलाओं के अधिकारों को सीमित करते हैं, वहीं राजनीति में समानता का सिद्धांत महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार देने का समर्थन करता है। इस प्रकार, धर्म और राजनीति के बीच नैतिकता, स्वतंत्रता, और कानून के स्तर पर संघर्ष उभरता है।

- **सामाजिक मुद्दे जैसे जाति, वर्ग और लिंग पर प्रभाव**

जाति, वर्ग, और लिंग जैसे सामाजिक मुद्दों पर भी धर्म और राजनीति का व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है। भारत जैसे देश में, जहाँ जाति–व्यवस्था का धार्मिक आधार है, धर्म ने जातिगत भेदभाव और सामाजिक संरचना को गहरे रूप से प्रभावित किया है। जाति–व्यवस्था के आधार पर समाज को विभिन्न वर्गों में विभाजित किया गया है, जिसमें उच्च जाति के लोगों को अधिक विशेषाधिकार मिलते हैं जबकि निम्न जाति के लोगों के लिए समाज में भेदभाव और अपमान सहना पड़ता है। यह भेदभाव धार्मिक ग्रंथों और परंपराओं में वर्णित है, जो समाज में एक गहरी सामाजिक संरचना को बनाए रखने का कार्य करते हैं।

राजनीति ने इस सामाजिक व्यवस्था को चुनौतियों का सामना कराया है और सामाजिक समानता के लिए विभिन्न प्रयास किए हैं। स्वतंत्रता के बाद, भारत में राजनीतिक ढांचे में समानता और सामाजिक न्याय के लिए अनेक सुधार लाए गए, जिनमें आरक्षण प्रणाली और सामाजिक सुधार कार्यक्रम शामिल हैं। ये प्रयास जातिगत भेदभाव को कम करने और समाज में सभी वर्गों को समान अधिकार प्रदान करने का प्रयास करते हैं। किंतु, कई धार्मिक समूहों और संगठनों ने राजनीतिक प्रयासों का विरोध किया है, जो जातिगत संरचना में परिवर्तन को अनावश्यक समझते हैं। इस प्रकार, धर्म और राजनीति के बीच जाति, वर्ग, और लिंग आधारित मुद्दों पर एक संघर्ष उत्पन्न होता है, जहाँ राजनीति सामाजिक सुधार और समानता की दिशा में आगे बढ़ती है, जबकि धर्म पारंपरिक संरचना का समर्थन करता है।

धर्म का लिंग आधारित भेदभाव पर भी प्रभाव है। कई धर्मों में महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा कम अधिकार दिए गए हैं, और सामाजिक संरचना में उनके स्थान को सीमित किया गया है। राजनीति में समानता के सिद्धांत के आधार पर महिलाओं को अधिकार देने के प्रयास किए गए हैं, जैसे महिलाओं के लिए शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देना। किंतु, धार्मिक परंपराओं और मान्यताओं के कारण लिंग आधारित भेदभाव को समाप्त करने में कई बार कठिनाइयाँ आती हैं।

- **धर्म और राजनीतिक आंदोलनों के प्रभाव**

धर्म और राजनीतिक आंदोलनों का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इतिहास में कई महत्वपूर्ण राजनीतिक आंदोलनों ने धार्मिक विचारधारा से प्रेरणा ली और समाज में परिवर्तन की शुरुआत की। उदाहरण के लिए, भारत के स्वतंत्रता संग्राम के समय धार्मिक और राजनीतिक विचारधाराओं का मेल देखा गया। महात्मा गांधी ने अहिंसा और सत्याग्रह जैसे धार्मिक मूल्यों का उपयोग करते हुए स्वतंत्रता संग्राम को एक नैतिक और सामाजिक आंदोलन का रूप दिया। उन्होंने हिंदू और इस्लामी विचारधाराओं का सहारा लेकर जनता को प्रेरित किया और उन्हें एकजुट किया। गांधीजी के नेतृत्व में धार्मिक आदर्शों का राजनीतिक आंदोलन में समावेश समाज में गहरे परिवर्तन का प्रतीक बना।

इसके अतिरिक्त, धार्मिक आंदोलनों ने भी समाज में बड़े पैमाने पर परिवर्तन की शुरुआत की है। जैसे भक्ति आंदोलन और सूफी आंदोलन ने भारत में सामाजिक सुधार और सहिष्णुता का संदेश फैलाया। इन आंदोलनों ने समाज में जाति और धर्म के आधार पर विभाजन का विरोध किया और सभी लोगों को समानता और

भाईचारे का संदेश दिया। ये आंदोलन धार्मिक और सामाजिक सुधार के उदाहरण हैं, जिन्होंने समाज में सांप्रदायिकता और जातिगत भेदभाव को समाप्त करने का प्रयास किया।
राजनीतिक आंदोलन भी धार्मिक तत्वों से प्रभावित होते हैं और कभी–कभी धार्मिक आंदोलनों को भी राजनीतिक उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। उदाहरणस्वरूप, भारत में विभिन्न राजनीतिक दलों ने धार्मिक मुद्दों का उपयोग अपने राजनीतिक उद्देश्यों को साधने के लिए किया है। इससे समाज में सांप्रदायिकता और धार्मिक ध्रुवीकरण भी होता है, जो कि समाज में संघर्ष और विभाजन को बढ़ावा देता है। इस प्रकार, धर्म और राजनीति का यह संबंध समाज पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव डालता है। धार्मिक और राजनीतिक आंदोलनों के माध्यम से समाज में बदलाव की शुरुआत की जा सकती है, लेकिन यह संबंध समाज में ध्रुवीकरण और संघर्ष का कारण भी बन सकता है।
इन सभी अंतर्क्रियात्मक कारकों के माध्यम से स्पष्ट होता है कि धर्म और राजनीति का समाज में गहरा प्रभाव है। दोनों अपने–अपने सिद्धांतों और आदर्शों के माध्यम से समाज को दिशा देते हैं, और इनके बीच के संबंध से समाज की संरचना और कार्यप्रणाली प्रभावित होती है।

निष्कर्ष

धर्म और राजनीति का संबंध अत्यंत जटिल और गहन है, जिसने मानव सभ्यता के हर युग में समाज की संरचना, नैतिकता और शासन प्रणाली पर गहरा प्रभाव डाला है। धर्म जहां व्यक्ति के जीवन में नैतिकता और आध्यात्मिकता का संचार करता है, वहीं राजनीति समाज में शांति, व्यवस्था और न्याय को बनाए रखने का प्रयास करती है। हालांकि, इन दोनों के बीच कई स्तरों पर संघर्ष और सहयोग देखा गया है, जो कभी समाज को स्थिरता और विकास की दिशा में आगे बढ़ाता है, तो कभी विभाजन और संघर्ष का कारण बनता है। आज के समय में, विशेष रूप से बहुलवादी और लोकतांत्रिक समाजों में, धर्म और राजनीति के बीच एक संतुलित और समावेशी संबंध बनाना आवश्यक है ताकि समाज में शांति, समता और समृद्धि को सुनिश्चित किया जा सके। इस प्रकार, धर्म और राजनीति के बीच संतुलन बनाए रखने के प्रयास समाज के विकास और लोकतांत्रिक संरचना को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं।

संदर्भ

- कुमार, एस. (2016). धर्म और राजनीतिः भारत में सांप्रदायिकता का उदय और प्रभाव. समाजशास्त्र समीक्षा, 11(2), 45–60.
- शर्मा, आर., – वर्मा, पी. (2017). भारत में धर्मनिरपेक्षता और राजनीतिक संरचना, भारतीय राजनीतिक अध्ययन पत्रिका, 22(3), 102–118.
- मिश्रा, ए. (2018). धर्म और राजनीतिक पहचानः भारतीय समाज पर प्रभाव, समाज और राजनीति जर्नल, 14(1), 33–48.
- चतुर्वेदी, डी. (2019). धार्मिक राष्ट्रवाद और भारतीय राजनीति का स्वरूप, राष्ट्रविज्ञान समीक्षा, 19(4), 67–82.
- जोशी, एम., – सिंह, के. (2020). धर्म के सामाजिक–राजनीतिक मुद्देः जाति, वर्ग, और पहचान, भारतीय सामाजिक अध्ययन जर्नल, 25(2), 55–70.
- अब्दुल्ला, ए. (2021). इस्लामिक राजनीतिक दर्शनः मध्य पूर्व और भारत में, राजनीति एवं समाज अध्ययन, 28(3), 94–109.
- नायडू, आर. (2019). आधुनिक राजनीति में धर्म और धर्मनिरपेक्षता का विकास, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति जर्नल, 17(3), 123–137.
- सिंह, वी., – पटेल, ए. (2017). राजनीतिक आंदोलनों में धार्मिक प्रेरणाः एक ऐतिहासिक विश्लेषण, सामाजिक विज्ञान समीक्षा, 21(1), 89–104.

- गुप्ता, एस. (2018). धर्म आधारित राजनीतिक ध्रुवीकरण और उसका सामाजिक प्रभाव, भारतीय राजनीति शोध पत्रिका, 16(2), 58–73.
- दास, के. (2019). धर्मनिरपेक्षता और बहुलवादः भारतीय लोकतंत्र के सामने चुनौतियाँ, अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र पत्रिका, 14(3), 112–126.